International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2025; 7(8): 79-81
Received: 06-06-2025
Accepted: 08-07-2025

डॉ. मिथिलेश कुमार
पीएचडी, उपाधि प्राप्त, ग्राम–अदलपुर, वार्ड न० 16, पो0 झंझारपुर, जिला–मधुबनी, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
डॉ. मिथिलेश कुमार
पीएचडी, उपाधि प्राप्त, ग्राम–अदलपुर, वार्ड न० 16, पो0 झंझारपुर, जिला–मधुबनी, बिहार, भारत।

स्वातन्त्रयोत्तर मैथिली कविता मे नारी विमर्श

मिथिलेश कुमार

DOI: https://www.doi.org/10.22271/multi.2025.v7.i8b.757

सारांश

पृष्ठभूमि: भारतीय साहित्य ने सदैव राष्ट्र की संघर्षगाथाओं, सांस्कृतिक परिवर्तनों तथा लिंग–परक दृष्टिकोणों को अभिव्यक्ति दी है। मैथिली काव्य, क्षेत्रीय साहित्य की एक महत्वपूर्ण धारा के रूप में, स्वतंत्रता आंदोलन और उसके पश्चात महिलाओं की सामाजिक–राजनीतिक स्थिति तथा उनकी सांस्कृतिक पहचान को समझने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यद्यपि समाज और साहित्य दोनों में महिलाओं की स्थिति हाशिए पर रही, फिर भी काव्य में वे प्रायः त्याग, संघर्ष और परंपरा की ध्वजवाहक के रूप में चित्रित हुईं।

उद्देश्य: इस शोध का उद्देश्य मैथिली कविता में महिला–प्रतिनिधित्व का आलोचनात्मक अध्ययन करना है। प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैंदृ

- चयनित मैथिली कविताओं में महिलाओं की छवि का विश्लेषण करना।
- स्वतंत्रता संग्राम एवं सामाजिक आंदोलनों का इन चित्रणों पर प्रभाव देखना।
- कविता में महिलाओं की द्वैध भूमिकाकृएक ओर आदर्श प्रतीक और दूसरी ओर सामाजिक अस्तित्वकृका मूल्यांकन करना।

कार्यविधि: यह अध्ययन गुणात्मक एवं व्याख्यात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है। स्वतंत्रता आंदोलन के काल एवं उसके पश्चात रचित प्रतिनिधि मैथिली कविताओं का पाठ–विश्लेषण किया गया। विद्याति, महाकवि चंदा झा तथा अन्य समकालीन कवियों की रचनाओं को आधार बनाया गया। साथ ही साहित्येतिहास, आलोचनात्मक निबंधों एवं संकलनों का सहारा लेकर विषयगत प्रवृत्तियों को संदर्भित किया गया।

परिणाम: विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि मैथिली काव्य में महिलाएँ प्रायः माँ, पत्नी अथवा त्याग की प्रतिमूर्ति के रूप में प्रस्तुत हुईं, जो राष्ट्रवादी एवं पारंपरिक आदर्शों से मेल खाती हैं। किन्तु कुछ कवियों ने यथार्थपरक चित्रण भी किया, जिसमें महिलाओं की शिक्षा की ओर बढ़ती रुचि, सामाजिक बंधनों से संघर्ष और आत्मपरक पहचान की झलक मिलती है। यह द्वैत दर्शाता है कि कविता में मिथकीय आदर्श से आगे बढ़कर वास्तविक जीवन की चुनौतियों को भी स्वर दिया गया।

निष्कर्ष: अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि मैथिली कविता ने एक ओर परंपरागत लिंग–मान्यताओं को पुष्ट किया, वहीं दूसरी ओर महिलाओं की सामाजिक भूमिका और उनके आत्मबोध को भी अभिव्यक्ति दी। इस प्रकार यह काव्य न केवल सांस्कृतिक प्रतीकवाद का संवाहक है, बल्कि बदलते सामाजिक परिदृश्य में महिला–अस्मिता को नए सिरे से परिभाषित करने का माध्यम भी है।

कुटशब्दः मैथिली कविता, महिला–प्रतिनिधित्व, भारतीय स्वतंत्रता, लिंग और साहित्य, सांस्कृतिक पहचान, राष्ट्रवाद, क्षेत्रीय साहित्य, नारीवादी साहित्य आलोचना

प्रस्तावना

भारतीय साहित्यक जखन अवलोकन करैत छी तँ सबसे पहिने 'कविता' भेटैत अछि। मैथिलीमे पहिल प्रामाणिक ग्रन्थ' वर्णरत्नाकर' भेटैत अछि वर्णरत्नाकर क भाषाक सम्बन्ध में डॉ0 सुनीति कुमार चर्टजी, बबुआजी मिश्र, डॉ0 सुकुमार सेन, आचार्य रमानाथ झा प्रमृति आदि विद्वान लोकनि 'गद्य' कहलन्हि अछि। मुदा डॉ0 काञ्चीनाथ झा किरण हिनका लोकनिक मतसँ भिन्नता राखैत छति आ वर्णरत्नाकरकेँ 'पद्य' मानैत छथि। वास्तवमे कोनो भाषा साहित्यमे पहिने 'पद्य' आ 'गद्य' ग्रन्थक रचना होइत छैक। मुदा वर्णरत्नाकर सन् उत्कृष्टि ग्रन्थेकँ देखि ई अनुमान लगाओल जाईछ जे एहिसँ पूर्व काव्यक रचना अवश्य भेल हैत।

अनुसंधानक अभावमे ओ सभ वस्तु अज्ञात अछि। एहि प्रसँगमें आचार्य रमानाथ झाक कथन सभीचीन बुझना जाईछ :–

> ''तँ ई कहब असंगत नहि होएत जे साहित्यिक रचना सेहो एहि जनपदीपय भाषामे बराबरि होईत आएल अछि, से यदि उपलब्ध नहि अछि तँ ताहिसँ ओकर अभाव मानब उचित नहि होएत। अनुपलब्धि अभावक प्रमाण नहि मानल जा सकैत अछि।

अनुपलब्धिक समाधान अन्यथा करए पडत। एहि अनुपलब्धिक प्रथम कारण भए सकैत अछि लिखिबाक कठिनता'[1]

ज्योतिरीष्वर ठाकुरक बाद कवि कोकिल विद्यापतिक आबिर्भाव मैथिली काब्य जगतमे भेल आ मैथिलीमे साहित्यिक काब्य रचना हिनकाहिसँ शुरू भेल। हिनक श्रृंगारिक काब्य रचनाक आधार अछि राधाकृष्ण नारी समाजक प्रतिनिधित्व करैत अछि। तत्कालीन सामंतवादी समाज मे नारीक स्वरूप भिन्न छल। वो पुरूषक आन्तरिक आकांक्षाक पूर्तिक साधन मात्र छलिह। विद्यपतिक श्रृंगारिक गीत मे नारीक विभिन्न मनोभावक अभिव्यक्ति अत्यन्त तन्मयता एवं संवैदनशिलताक संग कयल गेल अछि। पुरूषक कठोरता आ नारीक विवशताक भाव विद्यापतिक एहि पाँति मे प्रकट भेल अछि :–

''माधव कठिन हृदय परवासी''[2]

तहिना तत्कालीन समाज मे अनमेल विवाहक अभिव्यक्ति हिनकर महेशवाणी द्वारा भेल अछि :–

''हमनहि आजु रहब एहि आँगन
जौं बुढ़ होएता जमाय हे'' [3]

उपर्युक्त गीत मे बेटीक अनरूप वर नहि रहला पर मायक आक्रोश प्रकट होइत अछि। तहिना अवस्थानुरूप वर नहि पावि एकटा नव यौवनाक आर्त्तनाद अकानल जाय :–

''पियामोर बालक हम तरूणीगे,
कोन तप चुकलहू भेलहू जननीगे''।

मुदा विद्यापतिक अधिकांश श्रृंगारिक गीत मे नारी सौन्दर्यक चित्रण भेल अछि जे तत्कालीन सामन्तवादी प्रवृत्तिक द्योतक अछि।
विद्यापतिसँ हृर्षनाथ झा धरि नारी विषयक कविताक इएह स्वरूप छल। बीच मे एक मात्र कवि मनबोध भेलाह जे नारीक मातृ हृदयक वर्णन कयलनि जे देखल जाय :–

''कनइत जसोमति पहुँचलि जाय।
नेरू हेरएने जेहने धेनु गाय' [4]

ओकर बाद 1898 ई0 मे चन्दा झाक मिथिला भाषा रामायण भेटैत अछि जे देशकालक परिस्थितिकेँ परिभाषित करैत अछि तेँ एकरा नवीन कविताक बीजारोपण मानि सकैत छी एहि संबंध मे डॉ0 दुर्गानाथ झा श्रीश लिखैत छथि :–
आधुनिक कालक आरंभ 1900 ई0 सँ मानव उचित बुझना जाइत अछि तथापि बीजारोपणक दृष्टिएँ कोहुना एकरा 1880 ई0 सँ मानल जा सकैत अछि।
20म् शताब्दिक प्रथम दशक मे मैथिली साहित्य केँ समृद्ध कयनिहार किछु साहित्यसेवी मे पंडित जर्नादन झा जनसीदन सेहो छथि। हिनकर योगदान उपन्यास आ निबंधक क्षेत्र मे उल्लेखनीय रहल अछि, मुदा किछु समाज सुधारक विषयक कविता सेहो प्रसंशनीय अछि। तत्कालीन समाज मे नारी शिक्षाक अभाव छल। तेँ बाल विवाहक प्रथा प्रचलित छल एकर एहन दुष्परिणाम छल जे समाज मे विधवाक संख्या बढ़ैत गेल। विधवा ताराक संग क्रुर समाजक व्यवहारक मार्मिक चित्रण मार्मिक ढ़ंग सँ कयने छथि :–"सासु कहै छथि इएह राक्षसी बच्चा केँ खा गेलि। अबतहिँ घरक मशाल मिझौलक केहन अभागलि भेलि हमर दोष की अछि से पाठक मन मे लेथु विचारि जौँ किछु हो अपराध हमर तँ देथु दण्ड निरधारि सपनहूँ मे पति सुख नहि पाओल जन्म वृथा हम लेल पूर्व जन्म कृत पापहि सँ ई दुख विधाता देल विनती हमर श्रवणऽ राखथु विधवा नारीक लाज करथु किछु उचित व्यवस्था मैथिल सभ्य समाज।".

पंडित जनार्दन झा जनसीदनक ई आक्रोश आगु जाकऽ यात्री वो राजकमलक कविता मे विकराल रूप धारण कयलक।
अषाढ़क प्रकाशन 1936 ई0 क बाद एहि मैथिली कविता मे आधुनिक युगक संप्रेषण आदिक दृष्टिएँ ध्यान देल गेल अछि। एहि संबंध मे वैद्यनाथ मिश्र यात्री कहैत छथि :–
''प्राचीन परिपाटीक शब्द शिल्प नवीन भावना केँ अभिव्यक्त करवाक काल नेंगराय लागल तेँ वो आगू आबि गेलाह आ मैथिली कविता केँ हिन्दी छायावादी कविताक सम्मुख ठाढ़क देलनि। की शिल्प–विधान आ की तत्व चिन्तन दुनू दृष्टिएँ भुवनजी काव्यधारा केँ नवीन दिशा में मोड़ि लेल'' [5]

रामानाथ झा एहि विचार सँ सहमत छथि आ कहैत छथि :–

"हमरा साहित्य मे नवीनता इएह आनल आ प्रगतिवादक इएह प्रवर्त्तक थिकाह"

भूवनजीक पश्चात यात्री मैथिली काव्यधारा केँ आओर अधिक नवोन्मुख कयल। यात्रीजी मैथिली काव्यधारा केँ आरो अधिक नवोन्मुख कयल समाजक यर्थाचित्रण केँ ई श्रेयस्कर मानलनहि। प्रारंभ मे बुढ़वर, विलाप आदि रचनाक माध्यम सँ नारीक उप्रथा जन्य ई दुर्शाक चित्रण कयलन्हि आ बाल विवाहक घोर विरोध कयलन्हि। दलित वर्गक प्रति संवेदान हिनकर रचना मे स्वतंत्र दृष्टि गोचर होइत अछि।
यात्रीजीक प्रथम कविता संग्रह चित्रा मे माँ मिथिले (1931 ई0) आ अंतिम प्रणाम (1936 ई0) मे बाँकी 26 ता कविता 1941 ई0 सँ 1949 ई0 क बीच लिखल गेल अछि। चित्रा मे बुढ़वर, फेकनी, विलाप, गामक चिट्ठी, गोठ बिछनी आदि कविताक शीर्षक मे कवि नारी दशाक वर्णन कयलन्हि अछि। मिथिला मे बाल–विवाह वो वृद्ध–विवाहक परम्परा प्रचलित छल जाहि कारणेँ नारीक दशा दयनीय छल। विलाप शीर्षक कविता मे अपन विवाह केँ मोन पाड़ैत एकटा विधवा युवतिक कथन छन्हि :–

''परितारिक मरवा पर बहिन लऽ गेल,
किदन कहाँदन भेल विवाह भऽ गेल'' [6]

आधुनिक नारीक चित्रण ''राधिका'' शीर्षक कविता मे आजुक नारीक विलासितापूर्ण जीवन–यापन करवाक लेल अपन संस्कृतिक त्याग करैत छथि आ बाँके बिहारी लाल छथि वो पुरूष जे एहन ''राधिकाक'' रूप जाल मे फंसल छथि। ई नारी क चरित्र अपकर्ष थिक।
यात्री जीक बाद विभिन्न कविता मे कवि नारी जीवन पर विचार कयलन्हि अछि। समय परिवर्त्तनशील होयत अछि आ बदलैत रहैत परिस्थिति मे युगक मान्यता वो मूल्य सेहो बदलि जाइत अछि।
मिथिला मे परिवर्त्तनक गति सदा सँ मन्द रहल अछि एकर करण अछि एहि ठामक लोकक पुरानपंथी मनोवृत्ति। हँ इहो बात सत्य जे कोनो समाज अधिक दिनधरि कोनो परिवर्त्तनक उपेक्षा नहि कऽ सकैत अछि।
भारतीय संस्कृतिक इतिहास मे नारी जीवन पतिक लेल समर्पित रहल अछि। अपन परिवारमे कखनहुँ पत्नीक रूप मे, कखनहुँ मायक रूप मे आ कखनहुँ बहिनक रूप मे परिवारक मान मर्यादाक लेल भारतीय नारी अपन सम्पूर्ण जीवनक आहुति दैत रहैत छथि।

मैथिली नव कवितामे जीवनक मूल्य तकाल गेल अछि। सामजिक संरचनाक तल पर स्वतंत्र मानवीय धाराकेँ स्वतन्त्र पथ पर लऽ जेबाक लेल जतेक कविता लिख गेल अछि ओहिमे समाजक सहभागीताक क्रम मे नारी जतेक रहथुन बिना हुनका पर स्वतंत्र कविता ओ हुँनकर स्थिति ओ दृष्टि परिवर्त्तन कँ समक्ष आनि सकत ताहि परिपेक्ष्यमे बहुत काज भेल अछि। एहि क्रम मे राजकमल चौधरीक कविता अछि ''पति–पत्नीक कथा''।

स्वतंत्रताक बाद समाजक मानसिकता मे जे विकास भेलैक ओहिमे निश्चित रूप सँ नारीक ओहि दशाक वर्णन छलैक। राजकमलक अधिकांश कवितामे विद्रोहक साहित्य अछि। हिनकर विद्रोह सामाजिक व्यवस्था सँए परम्पराक जड़ता सँ एव्यवस्थाक अन्याय प्रियतासँ आ धर्मक पाखन्डी स्वरूपसँ छनि।

जीवकान्तक विभिन्न कविता संग्रह मे नारीक विभिन्न रूप देखौलन्हि अछि जाहिमे ओ नारीकेँ स्वयं अपन वाट पर चलैत देखऽ चाहैत छथि आ ताहिलेल विभिन्न रूपमे अपन कविताक माध्यमसँ नारीकेँ प्रेरित करैत छथिः–

''हमर वेटीक
लगजोरिक लाल, उजर, पीयर
पीयर होइत तुराईक ममता सँ''

हरेकृष्ण झाक विभिन्न कविता मे मिथिलाक सम्पूर्ण संग रचनाकेँ दोषी बुझैत छथि। समाजमे जे कोनो विकास भेल हो ई पुरूष प्रधान समाज एखनहूँ नारीक विषयमे ओएह परम्पराक दृष्टि अखतियारि करैत छथि।

एहि तरहेँ नारीक समाजिक दशाक मैथिलीक विभिन्न कवितामे दृष्टिगोचर होइत अछि। यात्री जी ओ राजकमलक बाद सोमदेव, धीरेन्द्र, मायानन्द मिश्र, हंसराज आ धूमकेतु आदि कविलोकनिक कवितामे नारी पर एहन बात नहि भेटैत अछि जे मूल रूपसँ नारी जीवनक समुचित व्याख्या प्रस्तुत कऽ सकऽ :–

''पूजैत छथि गौरीकें
अपना के आरोपित क
आ सुतल रहैत छथि औ लोकनि

खसा जाइत छथि आँगन में भोरूकवा तारा, आ नुका जाइत छथि आकाश मे'' [7]

स्वतंत्र भारतक नारी आईयो डेरायलि छथि बाट–घाटमे युवकक डर, सासुरमे सासु–ससुरक डर आ माय क कोखिमे नष्ट होयबाक डर आजुक नारीक चिन्तनक विषय अछि। शारीरिक, आर्थिक, मानसिक गुलामी मे आइयो हमर नारी नारकीय जीवनयापन कऽ रहल छथि।

मैथिलीमे स्वतंत्रताक बादक कविलोकनि में श्रमती शेफालिका वर्मा, शांन्ति सुमन, नीरजा रेणु, विभा रानी, वीणा मिश्र, सुष्मिता पाठक, ज्योत्सना चन्द्रम, ईलारानी आदि छथि।

स्वतंत्रताक बाद सम्पूर्ण देशमे नवचेतना आयल। मुदा मिथिला मे परिवर्त्तनक वसात शीध्र नहि आबि सकल। मैथिल समाजमे पर्दा–प्रथा छल जे नारीक विकासक लेल बाधक अछि। एहि सामाजिक कुप्रथाक विरोध परम्परवादी कवि बुद्धिधारी सिंह रमाकर कयलन्हि अछि।

पश्चात्य संस्कृति मे मिथिलाक नारी रंगि गेल सीता, सावित्रीक ई भूमि आइ विदेशी सभ्यता कँ स्वीकार कऽ रहल अछि। स्त्रीक पर्दा–प्रथा पर अपन आक्रोश व्यक्त करैत आ पुरूषक मानीसकताक पूर्ण विरोध प्रो0 हरिमोहन झा कयलन्हि अछि।

मैथिलीक विभिन्न खण्डकाव्य मे यथा सन्यासी, कृषक, दत्तवती द्रोहाग्नी, पतन लखिमारानी, शकुन्तला, त्रिपुण्ड, शरशय्या, समाधि, सावरमती, सीता, नरगंगा, पंचकन्या, उत्सर्ग, नोर, शकुन्तला, उत्तरा, एकलब्य आदि में नारी पात्रक आभि व्यंजना देखाओल गेल अछि जे सृजनशील चेतना शक्ति अविनाशी थिक। सृष्टि अछि प्रज्ञात्मक एवं दाम्पत्य अनुरंजनात्मक परिणाम। एहि सभ मे नारीक विभिन्न रूपक चित्रण भेल अछि।

एहिरतहेँ मैथिली साहित्यमे नारी विमर्शपर स्वतंत्र रूप सँ कोनो महाकाव्य वा खण्डकाव्य उपलब्ध नहि अछि। प्रत्येक महाकाव्य एवं (खण्डकाव्य मे प्रकारान्तर सँ नारीक विमिन्न स्वरूप क चित्रण भेल अछि जकरा कोनो साहित्यिक विद्या उपेक्षा नहि कऽ सकैत अछि। आजुक समाज मे नारीक महत्व आओर बढ़िगेल अछि जाहिसँ एहि वर्गक उपेक्षा कवि लोककनिक लेल सम्भव नहि अछि मुदा आवशकता अछि उदार दृष्टिकोणक एवं विस्तृत विवेचनक नारीक स्थिति में जेतक परिवर्त्तन भेल अछि ओतेक मैथिली कवितामे अद्यावधि चित्रण नहि भऽ सकल अछि।

संदर्भ

1. रामानाथ झा :–प्रबंध संग्रह–पृष्ट सं0–21
2. विद्यपति गीतशती–साहित्य अकादमी–पृष्ट सं0–90
3. कृष्णजन्म–मनमोध–मैथिली अकादमी–पृष्ट सं0–13
4. प्रथम भारतीय कवि सम्मलेन–कविता विभाग सभापतिक भाषण–पृष्ट सं0–07
5. कविता कुसुम–कविता संग्रह–आचार्य रमानाथ झा पृष्ट सं0–35
6. विलाप–वैद्यनाथ मिश्र यात्री–पृष्ट सं0–40–41
7. नानी–खाँड़ो–जीवकान्त–पृष्ट सं0–25